DEPARTMENT OF HINDI

GDCR

ACADEMIC CALENDAR

2022-23

हिंदी विभाग

वार्षिक साहित्यिक कैलेण्डर

(सत्र 2022–23)

क्रम	दिनांक	आयोजन
1.	01 जुलाई 2022	सत्रारंभ : प्रवेश कार्यादि
2.	31 जुलाई 2022	प्रेमचंद जयंती
3.	4 अगस्त 2022	तुलसी जयंती
4.	12 सितंबर 2022	डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र जयंती (अतिथि व्याख्यान)
5.	14 सितंबर 2022	हिंदी दिवस एवं साहित्य परिषद का उद्घाटन
6.	19–24 सितंबर 2022	एम. ए. की त्रैमासिक जांच परीक्षा
7.	10 अक्टूबर 2022	दिग्विजयदास राज्य स्तरीय साहित्यलेखन की सूचना
8.	12–13 नवंबर 2022	दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी
9.	28 नवंबर 2022	छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस
10.	05–10 दिसंबर 2022	एम. ए. सेमेस्टर का लिखित आंतरिक मूल्यांकन
11.	06 जनवरी 2023	एलुमनी मीट एवं नव वर्ष का अभिनंदन
12.	10 जनवरी 2023	विस्तार कार्यक्रम
13.	20 जनवरी 2023	शिक्षक–अभिभावक सम्मेलन
14.	फरवरी 2023	वसंतोत्सव एवं अतिथि व्याख्यान
15.	मार्च 2023	एम. ए. की त्रैमासिक जांच परीक्षा
16.	अप्रैल 2023	एम. ए. आंतरिक मूल्यांकन लिखित परीक्षा
17.	25 अप्रैल 2023	दिग्विजयदास जयंती एवं पुरस्कार वितरण समारोह

14.5.2022

(डॉ. शंकर मुनि राय)

विभागाध्यक्ष हिंदी

शासकीय महाविद्यालय

राजनांदगांव (छ.ग.)

मुंशी प्रेमचंद और तुलसी जयंती मनाई गई

(08 अगस्त 2022)

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा मुंशी प्रेमचंद और तुलसी की जयंती की जयंती संयुक्त रूप से मनाई गई। प्राचार्य डॉ. के. एल. टाण्डेकर की अध्यक्षता में आयोजित इस आयोजन में हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय सहित विभागीय प्राध्यापक डॉ. बी. एन. जागृत और शोधार्थियों–विद्यार्थियों ने अपने विचार रखे।

इस अवसर पर प्राचार्य ने कहा कि मुशी प्रेमचंद की रचनाएं हर काल में सामचिक रही हैं। उनकी कहानियां और उपन्यास भारतीय समाज के जीवन पर आधारित हैं। साथ ही आपने तुलसी दास को भी दुनिया के महान कवियों में से एक बताया।

विभागाध्यक्ष प्रथम डॉ. शंकर मुनि राय ने प्रेमचंद के साहित्यिक अवदान का उल्लेख करते हुए दुनिया का महान उपन्यासकार बताया। साथ ही उनके अंतिम उपन्यास 'गोदान' की समीक्षा करते हुए उसे महाकाव्यात्मक कृति बताया। इसी प्रकार गोस्वामी तुलसीदास को महान कवि निरूपित करते हुए उनके महाकाव्य 'रामचरित मानस' के महाकाव्यत्व को स्पष्ट किया।

विभागीय प्राध्यापक डॉ. बी. एन. जागृत ने मुशी प्रेमचंद की कहानियों के आधार पर उन्हें महान कथाकार बताया और तुलसी दास की कृतियों का उल्लेख किया।

स्नातकोत्तर अंतिम वर्ष के छात्र तुलेश्वर यादव ने मुशी प्रेमचंद और तुलसी दास का साहित्यिक परिचय दिया और उन्हें महान कथाकार के रूप में प्रतिष्ठापित किया। कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी बिन्दु डनसेना ने किया।

अतिथि व्याख्यान

(23 जुलाई 2022)

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी विभाग में आज अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गयां। 'भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएं' विषय पर आयोजित इस व्याख्यान में डॉ. श्रद्धा चंद्राकर , प्राचार्य शासकीय पीजी महाविद्यालय, बालौद ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार रखे। विषय पर बोलते हुए आपने कहा कि भारतीय साहित्य के अध्ययन की दिशा में जो प्रमुख समस्याएं हैं, उन्हें कई श्रेणियों में बांटा जा सकता है। इनमें भारतीय भूगोल, संस्कृति और सामाजिक अवधारणा आदि प्रमुख हैं।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. के. एल टाण्डेकर ने मुख्य वक्ता का स्वागत किया तथा अतिथि व्याख्यान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थियों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित कियां। व्याख्यान का संचालन डॉ. बी. एन. जागृत ने किया और धन्यवाद ज्ञापन विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय ने किया। इस अवसर पर एम.ए. हिंदी के कुल **10 विद्यार्थी** उपस्थित थे।

हिंदी दिवस पर विविध प्रतियोगिताएं आयोजित

मुख्य अतिथि ने कहा हिंदी सिर्फ भाषा ही नहीं हमारी मां है

(12 सितंबर 2022)

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में अनुविभागीय अधिकारी श्री अरुण वर्मा के मुख्य आतिथ्य और प्राचार्य डॉ. के. एल. टाण्डेकर की अध्यक्षता में हिंदी दिवस के साप्ताहिक कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि हिंदी सिर्फ भाषा ही नहीं बल्कि हमारी मां है। यह हमे भारतीयता का संस्कार देती है ओर जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करती है। आगे आपने विद्यार्थियों को हिदी में रोजगार के अवसर बताये।

पुस्तक विमोचन : हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय द्वारा संपादित पुस्तक 'कोरोना काल की कविताई' का विमोचन किया गया। इस पुस्तक में कोरोना काल में लिखित कुल 23 भोजपुरी रचनाकारों की कविताएं संकलित है। दिल्ली से

प्रकाशित इस पुस्तक के बारे में बताया गया कि यह क्षेत्रीय भाषा की ऐसी ऐतिहासिक पुस्तक है, जिसमें कोरोना काल की परिस्थितियों को तिथि सहित उधृत किया गया है।

हिंदी साहित्य परिषद का उद्घाटन : हिंदी दिवस के अवसर पर प्राचार्य डॉ. के. एल. टाण्डेकर ने प्रावीण्य सूची के आधार पर गठित हिंदी साहित्य परिषद का उद्घाटन किया और उन्हें बधाई दी। इसमें एवनदास को अध्यक्ष, तुलेश्वर यादव को उपाध्यक्ष, संजना निषाद को सचिव और मेहुल कुमार देवांगन को सह सचिव बनाया गया हैं

दिग्विजय में हिंदी दिवस पर विविध प्रतियोगिताएं आयोजित

राजनांदगांव (दावा)। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में अनुविभागीय अधिकारी अरुण वर्मा के मुख्य आतिथ्य और प्राचार्य डॉ. के. एल. टाण्डेकर की अध्यक्षता में हिंदी दिवस के समापन कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि हिंदी सिर्फ भाषा ही नहीं बल्कि हमारी मां है। यह हमें भारतीयता का संस्कार देती है और जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करती है। आगे आपने विद्यार्थियों को हिंदी में रोजगार के अवसर बताये।

पुस्तक विमोचन: हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय द्वारा संपादित पुस्तक 'कोरोना काल की कविताएँ' का विमोचन किया गया। इस पुस्तक में कोरोना काल में लिखित कुल 23 भोजपुरी रचनाकारों की कविताएं संकलित है। हिंदी से प्रकाशित इस पुस्तक के बारे में बताया गया कि यह क्षेत्रीय भाषा की ऐसी ऐतिहासिक पुस्तक है, जिसमें कोरोना काल की परिस्थितियों को तिथि सहित उधृत किया गया है।

मुख्य अतिथि ने कहा हिंदी सिर्फ भाषा ही नहीं हमारी मां है

हिंदी साहित्य परिषद का उद्घाटन: हिंदी दिवस के अवसर पर प्राचार्य डॉ. के. एल. टाण्डेकर ने प्रावीण्य सूची के आधार पर गठित हिंदी साहित्य परिषद का उद्घाटन किया और उन्हें बधाई दी। इसमें एवनदास को अध्यक्ष, तुलेश्वर यादव को उपाध्यक्ष, संजना निषाद को सचिव और मेहुल कुमार देवांगन को सह सचिव बनाया गया हैं

पुरस्कार वितरण: हिंदी दिवस के अवसर आयोजित विविध प्रकार की प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि और प्राचार्य ने प्रमाणपत्र और स्मृति चिन्ह देकर पुरस्कृत किये। भाषण प्रतियोगिता में क्रमशः अंकिता श्रीवास्तव, तुलेश्वर यादव और चंचल साहू को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। काव्यपाठ प्रतियोगिता में तुलेश्वर यादव को प्रथम, अंकिता श्रीवास्तव को द्वितीय और अनन्या स्वर्णकार को तीसरा पुरस्कार प्रदान किया गया। श्रुतिलेख में लुसिका देवी को प्रथम, योगिता साहू को द्वितीय और हर्ष देशमुख को तीसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसी प्रकार सामान्य हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता में तुलेश्वर यादव, योगिता साहू और सीमा साहू को क्रमशः पहले दूसरे और तीसरे स्थान के लिए पुरस्कृत किया गया।

हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए हिंदी विभाग की ओर से अंग्रेजी प्राध्यापक श्री चंदन सोनी, वनस्पति विज्ञान की प्रोफेसर सोनल मिश्रा और रजिस्ट्रार श्री दीपक परगनिहा और मंजुषा उपाध्याय को विशेष रूप से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. बी. एन. जागृत ने किया और आभार डॉ. नीलम तिवारी द्वारा प्रकट किया गया।

कथा साहित्य पर विशेष व्याख्यान

'कहानी ही साहित्य की आरम्भिक विधा है'–शिवमूर्ति

(११. अक्टूबर २०२२)

शासकीस दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी विभाग में आयोजित एकदिवसीय अतिथि व्याख्यान में चर्चित कथाकार श्री शिव मूर्ति, कैलाश बनवासी और डॉ. अंजन कुमार ने कहानी लेखन कला पर प्रकाश डाला। साथ ही विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नो का समाधान किया।

प्राचार्य डॉ. के. एल. टांडेकर के निर्देशानुसार आयोजित इस व्याख्यान में लखनऊ से पधारे व्याख्यान के प्रमुख वक्ता कथाकार श्री शिव मूर्ति ने कहा कि आमतौर पर यही माना जाता है कि साहित्य की प्राचीनतम विधा कविता है, जबकि सच्चाई यह है कि आदि कविता में भी कहानी ही लिखी गई है। अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए आपने कहा कि आदि कवि वाल्मीकि ने भी रामायण में रामकथा का ही वर्णन किया है। इसी प्रकार महाभारत जैसे महाकाव्य का कथानक भी एक कहानी ही है। इस प्रकार आपका आशय यह था कि साहित्य की प्राचीनतम विधा कहानी को ही माना जाना चाहिए।

आंचलिक कहानी के बारे में विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए एक प्रश्न के जवाब में आपने कहा कि हर कहानी में आंचलिकता होती है। यह आंचलिकता भाव और भाषा दोनों के आधार पर परखी जा सकती है। आपने यह भी कहा कि कहानी के कथानक सर्वत्र बिखरे हुए है। रचनाकार उन्हें अपनी रूचि के अनुसार चुनता और बुनता है।

व्याख्यान के आरम्भ में हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय ने अतिथि वक्ताओं का स्वागत किया और आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस प्रसंग में आपने कहा कि किसी भी रचनाकार से सीधे बातचीत करने का मतलब साहित्य को काफी नजदीक से समझना है। इसके विपरीत साहित्य पढ़कर उसकी सिर्फ व्याख्या ही की जा सकती है। इसलिए हमारा प्रयास होना चाहिए कि मौका मिलने पर रचनाकारों के व्याख्यान सुनने के बजाय उनसे बातचीत की जाए।

छत्तीसगढ़ के कथाकार श्री कैलाश बनवासी ने समकालीन कहानी की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला और कहा कि कहानी साहित्य की आरंभिक विधा है इसमें रचनाकार अपने साहित्यिक दर्शन को विस्तार से उजागर कर पाता है। डॉ. अंजन ने अपने सम्बोधन में हिंदी साहित्य के विद्यार्थोयों को इसलिए सौभाग्यशाली बताया, क्योंकि वे उस संस्था के विद्यार्थी है जिसे मुक्तिबोध और पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी ने साहित्यिक संस्कार दिया है।

महाविद्यालय के हिंदी साहित्य परिषद द्वारा आयोजित इस व्याख्यान में अवकाश प्राप्त अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री बी.एल. पाल, रंगकर्मी व केन्द्रिय विद्यालय में पदस्थ अजय साहू, विभागीय प्राध्यापक डॉ. स्वाति दुबे, गायत्री साहू, कौशिक लाल बिशी व अनिल कुमार साहू सहित स्नातकोत्तर हिंदी के कुल सत्तर विद्यार्थी उपस्थित थे।

दिग्विजय में कथा साहित्य पर विशेष व्याख्यान

कहानी ही साहित्य की आरम्भिक विधा है-शिवमूर्ति

राजनांदगांव (दीप जागृति)। दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी विभाग में आयोजित एकदिवसीय अतिथि व्याख्यान में चर्चित कथाकार श्री शिव मूर्ति, कैलाश बनवासी और डॉ. अंजन कुमार ने कहानी लेखन कला पर प्रकाश डाला. साथ ही विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए प्रश्नो का समाधान किया.

प्राचार्य डॉ. के. एल. टांडेकर के निर्देशानुसार आयोजित इस व्याख्यान में लखनऊ से पधारे व्याख्यान के प्रमुख वक्ता कथाकार श्री शिव मूर्ति ने कहा कि आमतौर पर यही माना जाता है कि साहित्य की प्राचीनतम विधा कविता है, जबकि सच्चाई यह है कि आदि कविता में भी कहानी ही लिखी गई है. अपनी बात को और स्पष्ट करते हुए आपने कहा कि आदि कवि वाल्मीकि ने भी रामायण में रामकथा का ही वर्णन किया है. इसी प्रकार महाभारत जैसे महाकाव्य का कथानक भी एक कहानी ही है. इस प्रकार आपका आशय यह था कि साहित्य की प्राचीनतम विधा कहानी को ही माना जाना चाहिए.

आंचलिक कहानी के बारे में विद्यार्थियों द्वारा पूछे गए एक प्रश्न के जवाब में आपने कहा कि हर कहानी में आंचलिकता होती है. यह आंचलिकता भाव और भाषा दोनों के आधार पर परखी जा सकती है. आपने यह भी कहा कि कहानी के कथानक सर्वत्र बिखरे हुए है. रचनाकार उन्हें अपनी रूचि के अनिसार चुनता और बुनता है.

व्याख्यान के आरम्भ में हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय ने अतिथि वक्ताओं का स्वागत किया और आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला. इस प्रसंग में आपने कहा कि किसी भी रचनाकार से सीधे बातचीत करने का मतलब साहित्य को काफी नजदीक से समझना है. इसके विपरीत साहित्य पढ़कर उसकी सिर्फ व्याख्या ही की जा सकती है. इसलिए हमारा प्रयास होना चाहिए कि मौका मिलने पर रचनाकारों के व्याख्यान सुनने के बजाय उनसे बातचीत की जाए.

छत्तीसगढ़ के कथाकार श्री कैलाश बनवासी ने समकालीन कहानी की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला और कहा कि कहानी साहित्य की आरंभिक विधा है इसमें रचनाकार अपने साहित्यिक दर्शन को विस्तार से उजागर कर पाता है. डॉ. अंजन ने अपने सम्बोधन में हिंदी साहित्य के विद्यार्थोयों को इसलिए सौभाग्यशाली बताया, क्योंकि वे उस संस्था के विद्यार्थी है जिसे मुक्तिबोध और पदुमलाल पुन्नालाल बक्शी ने साहित्यिक संस्कार दिया है.

महाविद्यालय के हिंदी साहित्य परिषद द्वारा आयोजित इस व्याख्यान में अवकाश प्राप्त अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री बी.एल. पाल, रंगकर्मी अजय साहू, विभागीय प्राध्यापक डॉ. स्वाति दुबे, गायत्री साहू, कौशिक लाल बिशि सहित स्नातकोत्तर हिंदी के कुल सत्तर विद्यार्थी उपस्थित थे.

साहित्यिक आयोजन

मुक्तिबोध जयंती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और पुस्तक विमोचन

राजनांदगांव : गजानन माधव मुक्तिबोध की 105वीं जयंती पर दो दिवसीय (12–13 नवंबर 2022) राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन शासकीय दिग्विजय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजनांदगांव (छत्तीसगढ़) के हिंदी विभाग द्वारा किया गया था। उल्लेखनीय है कि मुक्तिबोध जी ने इसी हिंदी विभाग में रहते हुए अपनी कालजयी कृतियों की रचना की है।

'मुक्तिबोध का साहित्य : युगबोध और प्रवृत्तियां' विषय' पर आधारित इस संगोष्ठी में पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति डॉ. केशरी लाल वर्मा मुख्य अतिथि के रूप में तथा जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्राध्यापक डॉ. देवेन्द्र चौबे अध्यक्ष के रूप में उपस्थित थे। विशेष अतिथि छिंदवाड़ा के डॉ. विजय कलमदार थे। इस अवसर पर हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय द्वारा संपादित पुस्तक 'मुक्तिबोध का साहित्य : युगबोध और प्रवृत्तियां ' का विमोचन भी किया गया।

संगोष्ठी में कुलपति डॉ. वर्मा ने कहा कि मुक्तिबोध की वैचारिक विशिष्टता ने लोगों को नया सोचने के लिए विवश किया, उनके साहित्य से नई चिंतन धारा प्रारंभ हुई। अध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र चौबे ने कहा कि

मुक्तिबोध के साहित्य पर तत्कालीन वैश्विक एवं राष्ट्रीय परिदृश्य का भी प्रभाव रहा। दूसरे दिन संगोष्ठी का समापन छत्तीसगढ़ी राजभाषा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय कुमार पाठक की अध्यक्षता में हुआ।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. के. एल. टाण्डेकर ने आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया।

दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन

राजनांदगांव. शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में गजानन माधव मुक्तिबोध की 105 वीं जयंती पर प्राचार्य डॉ. के.एल.टाण्डेकर के मार्गदर्शन में हिंदी विभाग द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी सम्पन्न हुई. जिसका शीर्षक "मुक्तिबोध का साहित्य युगबोध और प्रवृत्तियाँ" था. समापन समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. विनय कुमार पाठक, पूर्व अध्यक्ष छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग ने अपने उद्बोधन में कहा कि मुक्तिबोध का साहित्य तत्कालीन परिस्थितियों से उपजा था, भारत की स्वतंत्रता के बाद निर्मित परिस्थितियों से उनका मोह भंग हुआ जो उनकी रचनाओं में दिखता है.

वक्ताओं ने रखे विचारः राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन

मुक्तिबोध की वैचारिक विशिष्टता ने लोगों को नया सोचने किया विवश

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

राजनांदगांव. शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में गजानन माधव मुक्तिबोध की 105वीं जयंती पर 'मुक्तिबोध का साहित्य युगबोध और प्रवृत्तियां' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन शनिवार से शुरू हुआ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि डॉ. केशरी लाल वर्मा, कुलपति पं. सुंदरशंकर शुक्ल विवि ने कहा कि मुक्तिबोध की वैचारिक विशिष्टता ने लोगों को नया सोचने के लिए विवश किया। उनके साहित्य से नई चिंतन धारा प्रारंभ हुई, जो जीवन की नई अनुभूतियों से निर्मित हुई। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. देवेंद्र चौबे प्राध्यापक, भारतीय भाषा केन्द्र, जेएनयू नई, दिल्ली ने कहा कि मुक्तिबोध अपने साहित्य में समाज की संरचना को भिन्न तरीके से छूने का प्रयास करते रहे हैं, उनके साहित्य में दो समाजों के बीच संघर्ष की छाप दिखाई देती है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. विजय कलमदार, प्राध्यापक, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, छिंदवाड़ा ने कहा कि मुक्तिबोध का साहित्य उनके जाने के दशकों बाद भी याद किए जाता है, यह उनकी प्रासंगिकता को दर्शाता है। प्राचार्य केपल टांडेकर ने स्वागत उद्बोधन दिया। संगोष्ठी के संयोजक एवं विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय ने विषय प्रवर्तन करते हुए मुक्तिबोध के साहित्य में युगबोध एवं उनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

मुक्तिबोध जयंती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में पधारे जे.एन.यू. के प्रोफेसर

दिग्विजय कालेज में मन रही मुक्तिबोध की 105 वीं जयंती

राजनांदगांव(दावा)। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय में प्राचार्य डॉ. के.एल. टांडेकर के मार्गदर्शन में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ. शंकर मुनिराय के संयोजन में गजानन माधव मुक्तिबोध की 105 वीं जयंती मनाई जा रही है। इस अवसर पर दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया। शनिवार 12 नवम्बर को कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि डॉ. केशरी लाल वर्मा कुलपति रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर के द्वारा किया गया। उक्त संगोष्ठी में जे.एन.यू. के भारतीय भाषा केन्द्र के प्रोफेसर डॉ. देवेन्द्र चौबे की अध्यक्षता व डॉ. विजय कलमदार के विशिष्ट आतिथ्य में आधा दर्जन के करीब स्कालरों ने अपने शोध प्रबंध पढ़े। इसके पश्चात डॉ. देवेन्द्र चौबे सहित डॉ. विजय कलमदार ने स्कालरों के शोध प्रबंध पर टिप्पणी की व मुक्तिबोध के सम्बंध में तथा उनके रचना संसार पर सारगर्भित उद्बोधन दिये। कार्यक्रम का सुविज्ञ संचालन प्रो. नीलम तिवारी ने किया। इस अवसर पर कालेज के प्रिंसिपल डॉ. टांडेकर सहित प्रोफेसर शंकर मुनिराय व अन्य व्याख्याताओं व छात्र-छात्राओं के अलावा नगर के साहित्यकार कवि/आचार्य सरोज द्विवेदी, आत्माराम कोशा 'अमात्य', कुबेर साहू, गिरिश ठाकर 'स्वर्गीय', ओमप्रकाश साहू, लखनलाल साहू, अशोक, आकारा व अन्य साहित्यकार, सुधिजन उपस्थित थे।

आज 13 नवम्बर को मुक्तिबोध का साहित्य, युगबोध व प्रवृत्तियों के सम्बंध में चर्चा सहित मुक्तिबोध की कविताओं का पाठ किया जाएगा। इसके मुख्य अतिथि डॉ. वंश गोपाल सिंह कुलपति पं. सुन्दर लाल शर्मा वि.वि. बिलासपुर होंगे। अध्यक्षता छ.ग. राजभाषा आयोग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. विनय पाठक द्वारा की जाएगी। विशेष अतिथि डॉ. अरूण कुमार बोडीओ राजनांदगांव व वरिष्ठ कवि/ समीक्षक डॉ. अरूण कुमार यदु बिलासपुर होंगे।

एम ओ.यू. कार्यक्रम : शासकीय महाविद्यालय, मोहला

(18 नवंबर 2022)

शासकीय महाविद्यालय, मोहला के अतिथि व्याख्याता श्री यपेन्द्र गायकवाड और सुश्री रीना गोटे के साथ कुल 18 विद्यार्थियों का दल विभागीय प्राध्यापकों और यहां के विद्यार्थियों के साथ परस्पर परिचय किया।

इस दौरान दिग्विजय महाविद्यालय के विभिन्न विभागों का भ्रमण कर सृजन संवाद भवन में हिंदी विभाग के विद्यार्थियों के साथ बातचीत की। इसी क्रम में मुक्तिबोध संग्रहालय का भ्रमण कर वहां के बारे में जानकारी प्राप्त की।

इस भ्रमण में विभागीय प्राध्यापक डॉ. प्रवीण साहू, नीलम तिवारी, गायत्री साहू, स्वाती दूबे कौशिक बिशी और शोधार्थी बिन्दु डनसेना ने अतिथियों का स्वागत किया।

चित्र : मुक्तिबोध स्मारक के पास

छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस पर काव्यपाठ

(28 नवंबर 2022)

छत्तीसगढ़ी राजभाषा दिवस के अवसर पर आज शासकीय दिग्विजय महाविद्यालयय के हिंदी विभाग द्वारा छत्तीसगढ़ी काव्यपाठ का आयोजन किया गया। इसमें महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। प्रतियोगिता में एम. ए. हिंदी की छात्रा ढालेश्वरी साहू को प्रथम पुरस्कार मिला। हिंदी

एम. ए. के ही विद्यार्थी राममनोहर और तुलेश्वर यादव को क्रमशः दूसरा और तीसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ।

प्रतियोगिता से पूर्व छत्तीसगढ़ी भाषा की उपयोगिता और महत्व पर प्राचार्य डॉ. के. एल. टाण्डेकर ने कहा कि प्रदेश की समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं में छत्तीसगढ़ी भाषा और साहित्य का पाठ्यक्रम शामिल है, इसलिए इसको पाठ्यक्रम की तरह पढ़ना और पढ़ाना जरूरी हो गया है।

विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय ने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा जल्द ही मानक छत्तीसगढ़ी ग्रंथ का संपादन किया जाने वाला है। इससे छत्तीसगढ़ी को आठवीं अनुसूची में शामिल करने का आधार तैयार होगा। इस अवसर पर आपने स्वरचित छत्तीसगढ़ी कविता का पाठ भी किया। डॉ. बी. एन. जागृत ने भी अपनी छत्तीसगढ़ी रचना का पाठ किया।

कार्यक्रम में डॉ. माजिद अली छत्तीसगढ़ी भाषा को रोजगार परक बनाने संबंधी सुझाव दिये। डॉ. प्रवीण साहू, डॉ. नीलम तिवारी ने भी अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नीलम तिवारी और धन्वाद ज्ञापन डॉ. प्रवीण साहू ने किया।

07.01.2023 एलुमनी बैठक

शासकीय दिग्विजय महाविद्यलय राजनांदगांव में एलुमनी बैठक हिंदी विभाग द्वारा आयोजित की गई। जिसमें विभाग के पूर्व विद्यार्थियों को आमंत्रित कर एलुमनी का गठन किया गया।

भूतपूर्व विद्यार्थियों ने व्यक्त किया रोचक एवं प्रेरणास्पद विचार

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव के हिंदी विभाग में एलुमनी बैठक सम्पन्न

हृदीप छबड़ा

राजनांदगांव (गंगा प्रकाश)। राजनांदगाँव जिले के अग्रणी एवं प्रतिष्ठित दिग्विजय महाविद्यालय में एलुमनी बैठक विभागाध्यक्ष हिन्दी डॉ. शंकरमुनी शनिवार 07 जनवरी को आयोजित की गई। बैठक में महाविद्यालय के भूतपूर्व विद्यार्थी एवं शासकीय महाविद्यालय छुईखदान के प्राचार्य डॉ. जयंती विश्वास, शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. बी.एन. जागृत, जनसम्पर्क अधिकारी जिला बालोद चन्द्रेश ठाकुर, शासकीय महाविद्यालय ठेलकाडीह के सहायक प्राध्यापक डॉ.लालचंद सिन्हा, शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. प्रवीण साहू, डॉ. गायत्री साहू, डॉ.नीलम तिवारी, डॉ. मनीषा सोनी, गजेन्द्र साहू, प्रद्युम्न वैष्णव सहित महाविद्यालय के प्राध्यापक, भूतपूर्व विद्यार्थियों के अलावा एम.ए. हिन्दी के विद्यार्थीगण उपस्थित थे। इस अवसर पर भूतपूर्व विद्यार्थियों के द्वारा इस महाविद्यालय से जुड़े रोचक प्रसंगो पर प्रकाश डालते हुए रोचक एवं प्रेरणास्पद विचार व्यक्त किया।

बैठक में हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. शंकरमुनी राय ने एलुमनी के महत्व के संबंध में सारगर्भित विचार व्यक्त करते हुए एलुमनी के प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि एक शिक्षण संस्थान एवं शिक्षक के लिए सबसे गौरव की बात उनके विद्यार्थियों को उपलब्धि होती है। उन्होंने इस महाविद्यालय से शिक्षा अर्जन करने के पश्चात् विभिन्न पदों पर सुशोभित होने वाले विद्यार्थियों को एलुमनी से जुड़कर महाविद्यालय के विकास को गति प्रदान करने में अपनी बहुमूल्य भागीदारी निभाने को कहा। शासकीय महाविद्यालय छुईखदान के प्राचार्य डॉ. जयंती विश्वास ने हिंदी विभाग के एलुमनी को गठन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आने वाली पीढ़ी को इसे अक्षुण्ण बनाने की अपील की। हिंदी विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. बी.एन. जागृत ने अपने संघर्षमय सफर के संबंध में विद्यार्थियों को जानकारी देते हुए उन्हें चुनौतियों से डटकर मुकाबला करने को कहा।

बालोद जिले के जनसम्पर्क अधिकारी चन्द्रेश ठाकुर ने महाविद्यालय के गौरवशाली विरासत पर प्रकाश डालते हुए कहा कि शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय हिन्दी विभाग साहित्य मनीषी एवं मुर्धन्य साहित्यकार गजानंद माधव मुक्तिबोध, डॉ. पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी एवं डॉ. बल्देव प्रसाद मिश्र जैसे स्वनाम धन्य विभूतियों की पावन कर्मभूमि रही है। उन्होंने संस्था के विद्यार्थियों को समझाईश देते हुए कहा कि विश्व के प्रत्येक महापुरूष विपरीत परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना करते हुए जीवन में उपलब्धियों को हासिल किए हैं। श्री ठाकुर ने विद्यार्थियों को कठिन मेहनत, त्याग एवं संयम से जीवन में विशिष्ट उपलब्धि हासिल कर अपने माता-पिता एवं इस संस्थान का नाम रौशन करने को कहा।

डॉ. लालचंद सिन्हा ने कहा कि दुनिया में कोई भी काम असंभव नहीं है, बस आवश्यकता है दृढ़ इच्छाशक्ति एवं लक्ष्य के प्रति समर्पण की। सहायक प्राध्यापक श्री प्रवीण साहू ने कहा कि वे भी बहुत ही सामान्य एवं ग्रामीण परिस्थितियों का सामना करते हुए अपने लगन एवं परिश्रम के बदौलत आज इस मुकाम पर हैं। उन्होंने इस एलुमनी बैठक में इस महाविद्यालय से शिक्षा अर्जन कर उच्च पदों पर सुशोभित होने वाले संस्था के भूतपूर्व विद्यार्थियों की उपस्थिति पर प्रसन्नता व्यक्त की। कार्यक्रम को डॉ. गायत्री साहू, डॉ. नीलत तिवारी, डॉ. सुनीता सोनी, डॉ. मनीषा सोनी, गजेन्द्र साहू, श्री प्रद्युम्न वैष्णव ने भी संबोधित करते हुए रोचक जानकारियाँ दी। इस

विस्तार गतिविधि 2022–23

विश्व हिंदी दिवस पर श्रीराम कॉलेज में आयोजन

10 जनवरी 2023 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी विभाग के विद्यार्थियों के साथ विस्तार कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्राचार्य डॉ. के.एल. टाण्डेकर के निर्देशानुसार यह कार्यक्रम राजनांदगांव के श्रीराम कृषि महाविद्यालय में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के तहत कृषि महाविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ मिलकर विविध प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं।

कृषि महाविद्यालय के डायरेक्टर श्री नरेन्द्र गौतम और प्राचार्य श्री तुकेश वर्मा की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम में हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कार्यक्रम के आरंभ में मंचासीन अतिथियों द्वारा मां सरस्वती की प्रतिभा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित किया गया। उसके बाद महाविद्यालय परिवार द्वारा अतिथि प्राध्यापक डॉ. शंकर मुनि राय, डॉ. बी. एन. जागृत, डॉ. गायत्री साहू, डॉ. स्वाती दुबे तथा श्री कौशिक लाल बिशी का स्वागत पुष्पहार से किया गया।

इसके बाद प्राचार्य ने कार्यक्रम के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. शंकर मुनि राय को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। इस अवसर पर डॉ. राय ने बताया कि विश्व हिंदी दिवस का उद्देश्य हिंदी का प्रचार–प्रसार विश्व स्तर पर करना है।

इसकी शुरूआत 1975 में नागपुर में हुए पहले विश्व हिंदी सम्मेलन से हुई है। उल्लेखनीय है कि 14 सितंबर को हिंदी दिवस और 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रवासी भारतीयों सहित दुनिया के सभी देशों में हिंदी भाषा का प्रचार–प्रसार करना है।

श्रीराम कालेज के लिए प्रस्थान

इस अवसर पर डॉ. बी. एन. जागृत ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए प्रतियोगिता के नियम और शर्तें बताई। साथ ही यह भी बताया कि एक वक्ता के लिए सही–सही बोलना कितना महत्व रखता है। इसी प्रकार वादविवाद और कविता पाठ की बारीकियों को भी बताया गया। कार्यक्रम में वादविवाद, भाषण और कविता पाठ की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. बी. एन. जागृत और डॉ. गायत्री साहू ने प्रतिभागियों की प्रतिभा की समीक्षा की। साथ ही उन्हे पुरस्कृत भी किया गया।

मंचासीन अतिथि और प्राचार्य

वाद–विवाद प्रतियोगिता में एमए अंतिम वर्ष के छात्र श्री राममनोहर को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ, जिसके लिए पुरस्कृत किया गया।

इस कार्यक्रम हिंदी और पत्रकारिता विभाग क प्राध्यापकों सहित कुल 63 लोग शामिल हुए थे।

श्रीराम कृषि महाविद्यालय, राजनांदगांव का विशाल भवन

अतिथि व्याख्यान

08.02.2023

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी विभाग में आज अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। 'साहित्य लेखन की प्रविधि' विषय पर आयोजित इस व्याख्यान में वाराणसी से पधारी हिंदी की रचनाकार विदुषी डॉ. उषा कनक पाठक ने मुख्य वक्ता के रूप में अपने विचार रखे। इस अवसर पर हिंदी विभाग के सभी प्राध्यापक व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर गोष्ठी

(21 फरवरी 2023)

दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉ. के. एल. टाण्डेकर की अध्यक्षता में आयोजित इस गोष्ठी में हिंदी, भोजपुरी, अवधी, मराठी और छत्तीसगढ़ी भाषाओं के प्राध्यापकों और विद्यार्थियों ने अपनी मातृभाषा से संबंधित लोकगीत, मौसमी गीत तथा फागुनी गीतों की प्रस्तुति दी।

एम. ए. के विद्यार्थियो का शैक्षणिक भ्रमण

(25 फरवरी 2023)

हिंदी विभाग के एम.पूर्व एवं अंतिम के 24 विद्यार्थियों का दल ऐतिहासिक स्थल सिरपुर, कोडार जलाशय एवं कौशिल्या माता मंदिर चंदखुरी शैक्षिक भ्रमण हेतु प्रातः 08:00 बजे महाविद्यालय परिसर से बस कमांक CG 07 E 0855 से रवाना हुआ, जिसमें प्राध्यापक डॉ. बी एन जागृत, डॉ प्रवीण साहू, डॉ. नीलम तिवारी, डॉ गायत्री साहू, डॉ.स्वाति दूबे, कौशिक बिशी व शोधार्थी बिंदु आदि शामिल थे। हम सभी 11.30 बजे सिरपुर पहुंचे। वहां लक्ष्मण मंदिर व संग्रहालय, सुरंग टीला व 6–7वीं सदी के प्राचीन मंदिर व मूर्तियों का दर्शन किये और उनके ऐतिहासिक महत्व से परिचित हुए।

वहां से हम सब पुनः उत्साह से कोडार जलाशय के लिए रवाना हुए। सन् 1995 में निर्मित कोडार परियोजना महानदी की सहायक नदी है। इसका नामकरण सन् 1998 में वीर नारायण सिंह के नाम पर किया गया है। वर्तमान में कोडार जलाशय को धमतरी के तर्ज पर ईको टूरिज्म के रूप में विकसित किया जा रहा है। जिसका संचालन वन प्रबंधन समिति द्वारा किया जा रहा है।

लगभग 2 : 30 बजे कोडार जलाशय से चंदखुरी के लिए रवाना हुए। चंदखुरी माता कौशिल्या के लिए प्रसिद्ध है भारत में भगवान श्रीराम की माता कौशिल्या का एक मात्र मंदिर है। जिसे छत्तीसगढ़ शासन राम वन गमन पथ के अर्न्तगत इस तीर्थ स्थल को पर्यटन क्षेत्र के रुप में विकसित किया जा रहा है। तालाब के मध्य में भव्य मंदिरों के दर्शन करके सभी को अपूर्व आनंद एवं शांति की अनुभूति हुई। कुछ और नये स्थलों को देखने व जानने की जिज्ञासा लिए सभी बस मे सवार होकर राजनांदगांव के लिए निकल पड़े। रात्रि 08 बजे हमारी बस दिग्विजय कॉलेज पहुंच गयी। सभी विद्यार्थिगण अपने पालको के साथ घर के लिए प्रस्थान किए। इस तरह यह एक दिवसीय यात्रा सफलता पूर्वक पूर्ण हुई।

वसंतोत्सव एवं होली मिलन समारोह

07.03.2023

आज दिनांक 7 मार्च 2023 को हिंदी विभाग में वसंतोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें हिंदी विभाग द्वारा सभी महाविद्यालयीन प्राध्यापकों का रंग लगाकर स्वागत किया गया। उपस्थित विद्यार्थी एवं प्राध्यापकों ने होली से संबंधित अपने विचार प्रस्तुत किये।

अतिथि व्याख्यान : रोजगारी हिंदी पर व्याख्यान
वक्ताः डॉ श्रद्धा चंद्राकर और डॉ. अंजन कुमार

27 अप्रैल 2023 : शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी विभाग में रोजगारी हिंदी पर एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉ. के. एल. टाण्डेकर के निर्देशानुसार आयोजित इस व्याख्यान में हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए रोजगारी दिशा निर्देश करना था। विभागाध्यक्ष डॉ. शंकर मुनि राय ने व्याख्यान की रूपरेखा तथा उद्देश्य पर प्रकाश डाला और आमंत्रित अतिथि डॉ. श्रद्धा चंद्राकर और डॉ. अंजन कुमार का स्वागत डॉ. बी.एन. जागृत ने किया। व्याख्यान का संचालन डॉ. प्रवीण साहू ने किया।

राजनांदगांव, रविवार, 30 अप्रैल 2023 03

रोजगारी हिंदी पर व्याख्यान

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के हिंदी विभाग में रोजगारी हिंदी पर एक दिवसीय व्याख्यान का आयोजन किया गया।

प्राचार्य डॉ. के.एल. टाण्डेकर के निर्देशानुसार आयोजित इस व्याख्यान में हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए रोजगारी दिशा निर्देश करना था। विभागाध्यक्ष डॉ. शंकरमुनि राय ने व्याख्यान की रूपरेखा तथा उद्देश्य पर प्रकाश डाला और आमंत्रित अतिथि डॉ. श्रद्धा चंद्राकर और डॉ. अंजन कुमार का स्वागत डॉ. बी.एन. जागृत ने किया। व्याख्यान का संचालन डॉ. प्रवीण साहू ने किया।

व्याख्यान की मुख्य वक्ता डॉ. श्रद्धा चंद्राकर ने हिंदी के विद्यार्थियों के लिए पत्रकारिता के क्षेत्र में जाने का सुझाव दिया।

इस प्रसंग में आपने खोजी पत्रकारिता, ग्रामीण पत्रकारिता और खेल पत्रकारिता का उल्लेख किया और सुझाव दिया कि भाषा की अच्छी जानकारी हो तो इस क्षेत्र में आसानी से रोजगार तलाशे जा सकते हैं। इसी प्रकार वीडियो फिल्म के लिए स्क्रिप्ट राइटिंग तथा फोटो पत्रकारिता के लिए भी सुझाव दिये।

कल्याण महाविद्यालय, भिलाई के प्राध्यापक डॉ. अंजन कुमार ने विज्ञापन की भाषा पर बोलते हुए कहा कि विज्ञापन लिखना एक महत्वपूण भाषायी कला है। कुछ भी लिखने से पहले विषय और उसने पाठक का मनोविज्ञान समझना आवश्यक है। मीडिया की दुनिया में विज्ञापन का बहुत महतव बढ़ा है। इसके लिए हिंदी सहित स्थानीय भाषाओं के जानकार लोगों के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं।

पहले विषय और उसने पाठक का मनोविज्ञान समझना आवश्यक है। मीडिया की दुनिया में विज्ञापन का बहुत महतव बढ़ा है। इसके लिए हिंदी सहित स्थानीय भाषाओं के जानकार लोगों के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं।